



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY.

भाग II—खण्ड 3—उपखण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 527]

नई दिल्ली, बुधवार, दिसम्बर 27, 1972/पौष 6, 1894

No. 527]

NEW DELHI, WEDNESDAY, DECEMBER 27, 1972/PAUSA 6, 1894

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed
as a separate compilation

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue and Insurance)

NOTIFICATIONS

GOLD CONTROL

New Delhi, the 27th December 1972

S.O. (764 (E)—In exercise of the powers conferred by section 114, read with sub-section (6) of section 27, of the Gold (Control) Act, 1968 (45 of 1968), the Central Government hereby makes the following rules to amend the Gold Control (Licensing of Dealers) Rules, 1969, namely :—

1.(1) These rules may be called the Gold Control (Licensing of Dealers) Amendment Rules, 1972.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Gold Control (Licensing of Dealers) Rules, 1969 (hereinafter referred to as the said rules), in rule 2—

(a) after clause (d), the following clause shall be inserted, namely :—

“(dd) whether the applicant is a person who does not hold a valid licence to carry on business as a licensed dealer in his name or is a person who is not a partner of a firm which holds such licence;”;

- (b) to clause (f), the following proviso shall be added, namely :—

“Provided that nothing contained in this clause shall apply to an application for the issue of licence made by—

- (a) a co-operative society, all the members of which are certified goldsmiths
- (b) a certified goldsmith whose financial condition and educational background are such that there are reasonable grounds to believe that he would be able to discharge properly his obligations and functions as a licensed dealer and who, in the opinion of the Administrator, would not be able to handle, without the aid of a paid employee, a turnover larger than the turnover recorded in his entry book in the two calendar years immediately preceding the year in which the application is made ;
- (c) A person who desires to export out of India articles or ornaments, or both, and who, having regard to his antecedents and experience in the export of goods out of India, is found by the Administrator, after making such enquiry, if any, as he may consider necessary, to be suitable for grant of a licence, and who undertakes during a full calendar year after the grant of the licence, to sell only to persons outside India, articles, or ornaments, or both—
- (i) the net total value of which is not less than one lakh rupees and
- (ii) the total net gold content of which is not less than the equivalent of one thousand grammes of pure gold,

save that where any articles or ornaments, or both, are rejected by the person outside India on account of defect in manufacture or of quality, the person granted a licence under this proviso may sell such gold to other licensed dealers so, however, that the total pure gold content of the articles, or ornaments, or both, thus sold to other licensed dealers shall not be more than ten per cent of the total pure gold content of the articles or ornaments or both, sold to persons outside India.

Explanation I.—For the purposes of item (a) of this proviso, a co-operative society means a co-operative society registered under the law relating to co-operative societies in force in any State.

Explanation II.—For the purposes of item (b) of this proviso, a turnover not exceeding five thousand grammes per annum, on the average, shall be deemed to be a turnover which a certified goldsmith will be able to handle without the aid of a paid employee.”

3. In rule 3 of the said rules—

- (i) after clause (e), the following clause shall be inserted, namely :—

“(ee) that the turnover of the applicant in the twelve months immediately preceding the date of application for renewal of the licence was too low;”

Explanation.—For the purposes of this clause, low turnover means a turnover which is on the average, not more than fifty grammes per month except where the applicant satisfies the Administrator that there are sufficient reasons for an average monthly turnover of lower than fifty grammes.”

- (ii) after clause (f), the following clause shall be inserted, namely :—

“(g) that the applicant, if he was granted a licence under item (c) of the proviso to clause (f) of rule 2, has not committed any breach or failure in the performance of any part of the conditions specified in the Bond executed by him.”

वित्त मंत्रालय

(राजस्व और बीमा विभाग)

अधिसूचनाएं

स्वर्ण नियंत्रण

नई दिल्ली, 27 दिसम्बर, 1972

का० प्र० 764(अ).—स्वर्ण(नियंत्रण) अधिनियम, 1968 (1968 का 45) की, धारा 27 की उपधारा (6) के साथ पठित, धारा 114 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार, स्वर्ण नियंत्रण (व्यवहारियों का अनुज्ञापन) नियम, 1969 में संशोधन करने के लिए एतद्द्वारा निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् :—

1. (1) इन नियमों का नाम स्वर्ण नियंत्रण (व्यवहारियों का अनुज्ञापन) संशोधन नियम, 1972 है।

(2) ये नियम राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. स्वर्ण नियंत्रण (व्यवहारियों का अनुज्ञापन) नियम, 1969 (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त नियमों कहा गया है) में, नियम 2 में, —

(क) खंड (घ) के पश्चात् निम्नलिखित खंड अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

“(घ) क्या आवेदक ऐसा व्यक्ति है जिसके पास अनुज्ञप्त व्यवहारी के रूप में कारबार करने के लिए अपने नाम में विधिमान्य अनुज्ञप्ति नहीं है या वह ऐसा व्यक्ति है जो किसी ऐसी फर्म का भागीदार नहीं है जिसके पास ऐसी अनुज्ञप्ति है;”

(ख) खंड (घ) के साथ निम्नलिखित परन्तुक जोड़ा जाएगा, अर्थात् :—

“परन्तु इस खंड में अन्तर्विष्ट कोई भी बात अनुज्ञप्ति जारी करने के लिए निम्नलिखित द्वारा किए गए आवेदन को लागू नहीं होगी :—

(क) सहकारी सोसाइटी, जिसके सभी सदस्य प्रमाणित स्वर्णकार हैं ;

(ख) प्रमाणित स्वर्णकार जिसकी वित्तीय दशा और शैक्षिक आधार ऐसे जहां यह विश्वास करने के युक्तियुक्त आधार हैं कि वह, अनुज्ञप्त व्यवहारी के रूप में में अपनी बाध्यताओं और कृत्यों का उचित रूप से निर्वहन कर सकेगा और जो, प्रशासक की राय में, सचेतन कर्मचारी की सहायता के बिना, उस आवर्त से अधिक आवर्त में व्यवहार नहीं कर सकेगा जो उस वर्ष के ठीक पूर्ववर्ती दो कलैण्डर वर्षों में जिसमें आवेदन किया गया है, उसकी प्रविष्टि पुस्तक में अभिलिखित है ;

(ग) व्यक्ति जो वस्तुओं या आभूषणों, या दोनों का भारत से बाहर निर्यात करना चाहता है, और जो, भारत से बाहर माल के निर्यात करने में अपने पूर्ववृत्त और अनुभव के आधार पर, प्रशासक द्वारा, ऐसी जांच, यदि कोई हो, करने के पश्चात्, जैसी कि वह आवश्यक समझे, किसी अनुज्ञप्ति की मंजूरी के लिए उपयुक्त पाया गया है, और जो , अनुज्ञप्ति की मंजूरी के पश्चात् किसी पूरे कलैण्डर वर्ष के

दौरान ऐसी वस्तुओं, या आभूषणों, या दोनों को भारत से बाहर के व्यक्तियों को बेचने का बचनबन्ध करता है —

- (i) जिनका शुद्ध कुल मूल्य एक लाख रुपए से कम नहीं है और
- (ii) जिनकी कुल शुद्ध स्वर्ण मात्रा एक हजार ग्राम शुद्ध स्वर्ण के समतुल्य से कम नहीं है,

तथापि जहां कोई वस्तु या आभूषण, या दोनों भारत से बाहर के व्यक्ति द्वारा विनिर्माण में क्षुद्रि या क्वालिटी के कारण मंजूर कर दिए गए हों वहां ऐसा व्यक्ति, जिसको इस परन्तुक के अधीन अनुज्ञप्ति मंजूर की गई है, ऐसे स्वर्ण को अन्य अनुज्ञप्ति व्यवहारियों को बेच सकेगा, किन्तु अन्य अनुज्ञप्त व्यवहारियों को इस प्रकार बेची गई वस्तुओं, या आभूषणों, या दोनों की कुल शुद्ध स्वर्ण मात्रा भारत से बाहर के व्यक्तियों को बेची गई वस्तुओं, या आभूषणों, या दोनों की कुल शुद्ध स्वर्ण मात्रा के दस प्रतिशत से अधिक नहीं होगी।

स्पष्टीकरण 1.—इस परन्तुक की मद (क) के प्रयोजनों के लिए, सहकारी सोसाइटी से किसी राज्य में प्रवृत्त सहकारी सोसाइटियों से सम्बन्धित विधि के अधीन रजिस्ट्रीकृत सहकारी सोसाइटी अभिप्रेत है।

स्पष्टीकरण 2.—इस परन्तुक की मद (ख) के प्रयोजनों के लिए, औसतन पांच हजार ग्राम प्रति वर्ष से अधिक आवर्त ऐसा आवर्त समझा जाएगा जिसमें प्रमाणित स्वर्णकार किसी सर्वेक्षण कर्मचारी की सहायता के बिना व्यवहार कर सकेगा।”

3—उक्त नियमों के नियम 3 में,—

- (1) खंड (ड०) के पश्चात्, निम्नलिखित खंड अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—
- “(ड०ड०) अनुज्ञप्ति के नवीकरण के लिए आवेदन की तारीख से ठीक पूर्ववर्ती बारह मास में आवेदक का आवर्त बहुत कम था ;

स्पष्टीकरण.—इस खंड के प्रयोजनों के लिए, कम आवर्त से ऐसा आवर्त अभिप्रेत है जो औसतन पचास ग्राम प्रतिमास से, उस दशा के सिवाय, अधिक नहीं है जहां आवेदक प्रशासक का यह समाधान कर देता है कि पचास ग्राम से कम औसत मासिक आवर्त के लिए पर्याप्त कारण मौजूद हैं।” ;

- (ii) खंड (घ) के पश्चात्, निम्नलिखित खंड अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

“(घ) यदि आवेदक को नियम 2 के खंड (घ) के परन्तुक की मद (ग) के अधीन कोई अनुज्ञप्ति मंजूर की गई थी, तो उसने अपने द्वारा निष्पावित बन्धपत्र में विनिर्दिष्ट शर्तों के किसी भाग का कोई भंग नहीं किया है या वह उसका अनुपालन करने में असफल नहीं रहा है।”।

[सं० एफ० 13/16/72—जी०सी० II]

S.O. 765(E)—In exercise of the powers conferred by section 114 of the Gold (Control) Act, 1968 (45 of 1968), the Central Government hereby makes the following rules further to amend the Gold Control (Forms, Fees and Miscellaneous Matters) Rules, 1968, namely :—

1.(1) These rules may be called the Gold Control (Forms, Fees and Miscellaneous Matters) Amendment Rules, 1972.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In rule 5 of the Gold Control (Forms, Fees and Miscellaneous Matters) Rules, 1968) (hereinafter referred to as the said rules) :—

(a) in sub-rule (2), to clause (i), the following proviso shall be added, namely :—

“Provided that an application referred to in section 27 for grant of licence for the sale of articles, or ornaments, or both, to persons outside India shall be in form No. G.S. 6A.”

(b) in sub-rule (3), in clause (i), for the word, letters and figure “form No. G.S. 6” the words, letters and figures “form No. G.S. 6 or form No. G.S. 6A, as the case may be” shall be substituted.

3. To rule 6 of the said rules, in sub-rule (1), for the words, letters and figure “in form No. G.S. 8”, the following shall be substituted, namely :—

“where the articles, or ornaments, or both are to be sold within India, in form No. G.S. 8, and where the articles, or ornaments, or both, are to be sold only to persons outside India, in form No. G.S. 8A.”

4. After rule 15 of the said rules, the following rule shall be inserted, namely :—

“15A. *Bond to be executed in certain cases.*—Every person who is granted a licence under section 27 in form No. G.S. 8A to export out of India articles, or ornaments, or both, shall at the time of grant of such licence, execute a Bond in form No. G.S. 24.”

5. In the Appendix to the said rules—

(a) after form No. G.S. 6, the following form shall be inserted, namely :—

“FORM No. G.S. 6A”
[See rule 5(2)]

*for sales to persons
outside India.*

Application for issue or renewal of Licence by Dealer in Gold.
(Delete the letters and words not applicable)

To,

The (here fill in the authority authorised under section 4 to exercise the powers of the Administrator).

Sir,

I/We (Block letters).....son of.....
.....residing at.....request that I/We may be granted a licence to
the accompanying

during
deal in gold-----the year ending the 31st December, 19-----,
may be renewed for

2. I/We hereby declare that the particulars of the premises for dealing in gold are as specified in the Schedule below.

3. I/We agree to abide by the provisions of the Gold (Control) Act, 1968, (45 of 1968) and the rules, orders and directions issued there under and the terms and conditions of the licence which may be granted/renewed, and further undertake that, during a full calendar year after the grant of the licence, I/We shall dispose of by sale only to persons outside India articles or ornaments or both—

(i) the net total value of which is not less than one lakh rupees and

(ii) the total net gold content of which is not less than the equivalent of one thousand grammes of pure gold.

save the where any articles or ornaments, or both, are rejected by the person outside India on account of defect in manufacture or of quality, I/We shall dispose of the same in accordance with the provisions of the Gold (Control) Act, 1968 (45 of 1968) and where such gold has to be sold the same shall be sold only to other licensed dealers and the total pure gold content of the articles, or ornaments, or both, thus sold shall not exceed ten percent of the total pure gold content of the articles, or ornaments, or both, sold to persons outside India.

4. I/We have appended a treasury challan in payment of the licence fee of Rupees..
renewal

5. I/We hereby declare that no licence previously held by me/us has been revoked or suspended, or could not be renewed owing to branch of any provision of Part XII/A of the Defence of India Rules, 1962, or the Gold (Control) Ordinance, 1968 (6 of 1968) or the Gold (Control) Act, 1968 (45 of 1968) or the rules, orders or directions issued thereunder.

6. I/We have a branch of my business at the following premises.

branches our

Licence(s) in respect of the branch will be applied for separately to the proper officer at.....
..... branches.....

I/We am/are also partner(s) in the business of
have financial interest

Licence(s) in respect of this business will be applied separately to the proper officer at.....

8. I/We append herewith full particulars of the transactions made by me/us in proof of my/our past experience in the export of goods out of India.

9. I/We declare to the best of my/our knowledge and belief the information furnished her^e is true and complete and that I/We have no other interest(s) in any other business, relating to the^e refining, converting, manufacturing, making, purchase sale of gold or article made of gold including ornaments.

Place.....

Date.....

Signature(s) of the applicant(s)

Instructions

If the applicant has any other interest in any other establishment dealing in or with gold, full particulars should be stated under item 7.

SCHEDULE

Address of Premises	Distingui- shing letter number of each	Detailed Purpose description of each
1. Brief description (with boundaries) of the premises to be used.....		
2. Description of each main division or sub-division of the premises.....		
3. Safe-room or other place(s) of storage.....		
4. No. of shifts per day worked.....		
5. No. of persons employed.....		
6. Names and addresses of partners and others having financial interest in the business.....		
7. Names of managerial and clerical staff employed.....		
8. No. of workmen, working in the premises, per shift.....		
9. Broad details of machinery and power used, e.g., voltage, rectifiers, transformers, crucibles, nature and type of fuel generally used.....		
10. Other manufacturing details.....		
11. Quantity, description and purity of gold received during 12 months ending 31st December, 19.....		
12. Quantity, descriptions and purity of gold disposed of during 12 months ending 31st December, 19.....		
13. Weight of pure gold equivalent of total net gold content, (i) value of gold disposed of by sale to persons outside India and to foreign tourists against payments in foreign currency (ii) to others		

Signature(s) of the applicant(s).

NOTE : 1. All varieties of gold of whatever purity and form should be included in the application.

2. Full particular of the transactions made for export of goods out of India should be appended in case the application is for issue of licence.

3. Purity of gold should be expressed in terms of carats (100 per cent purity being 24 carats) or in fineness per mille. The description, weight and purity of each article of gold should be separately recorded."

4. Pure gold means gold of 24 carat purity.

(b) after form No. G.S. 8, the following form shall be inserted, namely :—

Range.....

Circle.....

"FORM NO. G.S. 8-A"

[See rule 6(1)]

*For sales to persons outside
India and to foreign tourists*

LICENCE TO DEAL IN GOLD

(Delete the letters and words not applicable)

Shri/Sarvashri.....address.....having undertaken to comply with the conditions prescribed in the Gold (Control) Act, 1968 (45 of 1968) and the rules, orders and directions issued thereunder and having paid the prescribed licence fee of Rs..... is/are hereby authorised to deal in gold during the year ending 31st December, 19..... in the undermentioned premises, subject to the provisions of the said Act and the rules, orders and directions issued thereunder.

Address of the premises (As described in the Application for Licence).

.....
.....

2. The privilege conferred by this licence extends only to dealing in gold subject, however, to the condition that the holder(s) of this licence shall, during a full calendar year after the grant of the licence, dispose of by sale only to persons outside India, articles, or ornaments, or both—

- (i) the net total value of which is not less than one lakh rupees and,
- (ii) the total net gold content of which is not less than the equivalent of one thousand grammes of pure gold.

save that where any articles or ornaments, or both, are rejected by the person outside India on account of defect in manufacture or of quality, the same shall be disposed of in accordance with the provisions of the Gold (Control) Act, 1968 (45 of 1968), and where such gold has to be sold, the same shall be sold only to other licensed dealers and the total pure gold content of the articles, or ornaments, or both, thus sold shall not exceed ten per cent or the total pure gold content of the articles, or ornaments, or both, sold to persons outside India.

3. No corrections in the licence will be valid unless ordered and attested by the licensing authority.

4. This licence may be cancelled, or suspended, or its renewal may be refused, in accordance with the provisions of the Gold (Control) Act, 1968 (45 of 1968).

5. The grant of this licence shall be without prejudice to the rights of any other persons over the licensed business or the licensed premises to which such person may be entitled under any other law.

Place.....

Date.....

Seal.....

Licensing Authority.

Renewal of the Licence

Date of Renewal	Year for which renewed	Signature of proper officer

NOTE :—The licence should be displayed at a prominent place in the authorised premises in such a manner that it can be visible to any proper officer/other person visiting the premises."

(c) after form No. G.S 23, the following form shall be inserted, namely:—

“FORM No. G. S.-24”

BOND (WITH SECURITY) TO BE ENTERED INTO BY A PERSON FOR APPLYING FOR GRANT OF DEALER'S LICENCE FOR EXPORT OF ORNAMENTS OR ARTICLES, OR BOTH.

(See rule 15A)

(Delete the words and letters not applicable)

I/We.....of.....[hereunder called the obligor(s)]
am

are jointly and severally bound to the President in the sum of five hundred rupees to be paid to the President for which payment we jointly and severally bind myself/ourselves and my our legal representatives.

The above bounden obligor (s) being granted a licence to deal in gold at..... and registered in the records of the Gold Control Officer as No.....dated.....

Whereas the licensing authority has required the obligor(s) to deposit, as guarantee for the amount of this Bond, the sum of five hundred rupees in cash

the securities as hereinafter mentioned of a total face value of five hundred rupees endorsed in favour of the President of India and accepted on his behalf by the Assistant Collector of Central Excise, namely :—

And whereas the obligor(s) has have furnished such guarantee by depositing with the Assistant Collector the cash securities as afore-mentioned;

The conditions of this Bond are—

(a) that the obligor(s) and his /their legal representatives shall, during a full calendar year after the grant of the licence, dispose of by sale only to persons outside India articles, or ornaments, or both—

(i) the net total value of which is not less than one lakh rupees, and

(ii) the total net gold content of which is not less than the equivalent of one thousand grammes of gold of 24 carat purity (hereinafter referred to as pure gold) ;

(b) that where any articles, or ornaments, or both, are rejected by the person outside India on account of defect in manufacture or of quality, they shall be disposed of in accordance with the provisions of the Gold (Control) Act, 1968 (45 of 1968), and where such gold has to be sold, the same shall be sold only to other licensed dealers and the total pure gold content of the articles, or ornaments, or both, thus sold shall not exceed ten per cent. by weight of the total pure gold content of the articles, or ornaments, or both, sold to the persons outside India.

If the conditions mentioned above are complied with, this obligation shall be void. Otherwise, and on breach or failure in the performance of any part of this condition, the same shall be in full force.

And the President of India, shall, at his option, be competent to forfeit the amount of the guarantee deposit. I/We declare that this Bond is given under the orders of the Central Government for the performance of an act in which the public are interested.

Place.....

Date.....

Signature(s) of obligor(s).

Witness (1).....Address (1).....Occupation (1).....

Witness (2).....Address (2).....Occupation (2).....

Accepted by me this

day of

19 ..

.....of Central Excise.

F. No. 131/6/72-GC II.

[M. A. RANGASWAMY]

Gold Control Administrator and

Jt. Secy.

स्वर्ण नियंत्रण

का० आ० 765(अ).—स्वर्ण (नियंत्रण) अधिनियम 1968 (1968 का 45) की धारा 114 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार, स्वर्ण नियंत्रण (प्ररूप, फीस और प्रकीर्ण विषय) नियम, 1968 में और संशोधन करने के लिए एतद्द्वारा निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् :

- (1) इन नियमों का नाम स्वर्ण नियंत्रण (प्ररूप, फीस और प्रकीर्ण विषय) संशोधन नियम, 1972 है ।

(2) ये नियम राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. स्वर्ण नियंत्रण (प्ररूप, फीस और प्रकीर्ण विषय) नियम, 1928 (जिस हसमे इसके पश्चात् उक्त नियमों कहा गया है) के नियम 5 में,—

(क) उप-नियम (2) में, खण्ड (1) के साथ निम्नलिखित परन्तुक जोड़ा जाएगा, अर्थात्:—
“परन्तु भारत से बाहर के व्यक्तियों को वस्तुओं, या आभूषणों या दोनों के विक्रय के लिए अनुज्ञप्ति की मंजूरी के लिए धारा 27 में निर्दिष्ट आवेदन प्ररूप सं० जी० एस० 6क में होगा”;

(ख) उप-नियम (3) में, खण्ड (i) में, “प्ररूप सं० जी० एस० 6” शब्द अक्षरों और अंक के स्थान पर, “यथास्थित, प्ररूप सं० जी० एस० 6या प्ररूप सं० जी० एस० 6क” शब्द, अक्षर और अंक प्रतिस्थापित किए जाएंगे।

3. उक्त नियमों के नियम 6में, उपनियम (1) में, “प्ररूप” सं० जी० एस० 8 में” शब्दों, अक्षरों और अंकों के स्थान पर, निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया जाएगा; अर्थात्:—

“जहां वस्तुओं, या आभूषणों, या दोनों का भारत में विक्रय किया जाना हो वहां प्ररूप सं० जी० एस० 8 में, और जहां वस्तुओं, या आभूषणों या दोनों का केवल भारत से बाहर के व्यक्तियों को विक्रय किया जाना हो वहां प्ररूप सं० जी० एस० 8क में”।

4. उक्त नियमों के नियम 15 के पश्चात्, निम्नलिखित नियम अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात्:—

“15 क—कतिपय मामलों में निष्पादित किया जाने वाला बन्धपत्र—एसा प्रत्येक व्यक्ति जिसको वस्तुओं, आभूषणों या दोनों का भारत से बाहर निर्यात करने के लिए प्ररूप सं० जी० एस० 8क में धारा 27 के अधीन अनुज्ञप्ति मंजूर की गई है ऐसी अनुज्ञप्ति की मंजूरी के समय, प्ररूप सं० जी० एस० 24 में बन्धपत्र निष्पादित करेगा”

5. उक्त नियमों के परिशिष्ट में,—

(क) प्ररूप सं० जी० एस० 6 के पश्चात् निम्नलिखित प्ररूप अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात्:—

“प्ररूप सं० जी० एस० 8क

[नियम 5 (2) देखिए] भारत से बाहर के व्यक्तियों को विक्रय के लिए

अनुज्ञप्ति जारी करने या उसके नवीकरण के लिए स्वर्ण के व्यवहारी द्वारा आवेदन।
(जो अक्षर और शब्द लागू नहीं होते उन्हें काट दीजिए)

सेवा में,

(यहां प्रशासक की शक्तियों का प्रयोग करने के लिए धारा 4 के अधीन प्राधिकृत प्राधिकारी लिखा जाए)।

महोदय,

में / हम, का रहने वाला / के रहने वाले श्री का
का/के पुत्र (स्पष्ट अक्षरों में) (पहले उपनाम लिखें)

यह निवेदन करता हूँ/करते हैं कि मुझको/हमको 31 दिसम्बर, 19... को समाप्त होने वाले वर्ष के दौरान स्वर्ण में व्यवहार करने के लिए अनुज्ञप्ति मंजूर की जाए/स्वर्ण में व्यवहार करने के लिए संलग्न अनुज्ञप्ति 31 दिसम्बर, 19... को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए नवीकृत की जाए।

2. में/हम एतद्वारा घोषणा करता हूँ / करते हैं कि स्वर्ण में व्यवहार करने से सम्बन्धित परिसरों की विनिष्ठियां वे हैं जो नीचे की अनुसूची में विनिष्ठि की गई हैं।

3. में/हम स्वर्ण (नियंत्रण) अधिनियम, 1968 (1968 का 45) के उपबन्धों और उसके अधीन जारी किए गये नियमों, आदेशों और निर्देशों तथा ऐसी अनुज्ञप्ति के निबन्धनों और शर्तों को पालन करने के लिए सहमत हूँ/हैं जो मंजूर/नवीकृत की जाए, और यह भी बचनबध करता हूँ/करते हैं अनुज्ञप्ति की मंजूरी के पश्चात किसी पूरे कलन्डर वर्ष के दौरान, हम केवल भारत से बाहर के व्यक्तियों को ऐसी वस्तुओं या आभूषणों या दोनों का विक्रय द्वारा व्ययन करूंगा/करेंगे, :—

(I) जिनका शुद्ध कुल मूल्य एक लाख रुपये से कम नहीं है, और

(II) जिनकी कुल शुद्ध स्वर्ण मात्रा एक हजार ग्राम शुद्ध स्वर्ण के समतुल्य से कम नहीं है, तथापि जहाँ कोई वस्तु या आभूषण, या दोनों भारत से बाहर के व्यक्ति द्वारा विनिर्माण में त्रुटि या क्वालिटी के कारण नामंजूर कर दिये गये हों वहाँ में/हम उनका व्ययन स्वर्ण (नियंत्रण) अधिनियम, 1968 (1968 का 45) के उपबन्धों के अनुसार करूंगा/करेंगे, और जहाँ ऐसे स्वर्ण का विक्रय किया जाना हो वहाँ वह केवल अन्य अनुज्ञप्त व्यवहारियों को बेचा जाएगा, और इस प्रकार बेची गई वस्तुओं या आभूषणों, या दोनों की कुल स्वर्ण मात्रा भारत से बाहर के व्यक्तियों को बेची गई वस्तुओं, या आभूषणों, या दोनों की कुल शुद्ध मात्रा के दस प्रतिशत से अधिक नहीं होगी।

4. मैंने/हमने — रूपए अनुज्ञप्ति/नवीकरण फीस के संदाय में खजाना चालान संलग्न कर दिया है।

5. में / हम एतद्वारा घोषणा करता हूँ / करते हैं कि मेरे हमारे द्वारा पहले धारित कोई भी अनुज्ञप्ति ऐसी नहीं है, जो भारत रक्षा नियम, 1962 के भाग 12क, या स्वर्ण (नियंत्रण अध्यादेश), 1968 (1968 का 6) या स्वर्ण (नियंत्रण) अधिनियम, 1968 (1968 का 45) के किसी उपबन्ध या उसके अधीन जारी किए गए नियमों, आदेशों या निर्देशों के भंग की वजह से, प्रतिसंहत या निलम्बित की गई हो, या वह नवीकृत नहीं की जा सकती।

6. मेरे / हमारे कारबार की निम्नलिखित परिसरों पर शाखा है / शाखाएं हैं।

इस शाखा / इन शाखाओं की बाबत अनुज्ञप्ति (यों) के लिए— स्थित उचित अधिकारी को अलग से आवेदन किया जाएगा / किए जाएंगे।

7. में / हम — के कारबार में भी भागीदार हूँ / हैं या उसमें वित्तीय हित रखता हूँ / रखते हैं। इस कारबार बाबत की अनुज्ञप्ति (यों) के लिए स्थित उचित अधिकारी को अलग से आवेदन किया जाएगा / किए जाएंगे।

8. मैंने/हमने भारत से बाहर माल के निर्यात के सम्बन्ध में अपने पिछले अनुभव के सबूत में अपने द्वारा किये गये संव्यवहारों की पूरी विनिष्ठियां इसके साथ संलग्न कर दी हैं।

9. मैं / हम अपने सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के अनुसार घोषणा करता हूँ / करते हैं कि यहाँ दी गई जानकारी सही और पूर्ण है और मेरा/हमारा स्वर्ण या स्वर्ण की बनाई गई वस्तुओं, जिनमें आभूषण भी सम्मिलित हैं के परिकरण, रूपान्तरण विनिर्माण निर्माण क्रय या विक्रय से सम्बन्धित किसी अन्य कारबार में कोई अन्य हित नहीं है।

स्थान —
तारीख —

आवेदक के हस्ताक्षर

अनुदेश :

यदि आवेदक का स्वर्ण में व्यवहार करने वाले किसी अन्य स्थापन में कोई अन्य हित हो तो पूरी विनिष्टियां मद 7 के नीचे विवर्णित की जाएं ।

अनुसूची

परिसरों का पता	प्रत्येक की सुभेदक पत्र संख्या	प्रत्येक का विस्तृत वर्णन	प्रत्येक का प्रयोजन
(1)	(2)	(3)	(4)
1. प्रयोग किए जाने वाले परिसरों का संक्षिप्त वर्णन (सीमाओं सहित)	-----		
2. परिसरों के प्रत्येक मुख्य खण्ड या उपखण्ड का वर्णन	-----		
3. भण्डारकरण का/के सुरक्षित स्थान या अन्य स्थान	-----		
4. प्रति दिन कार्य करने वाली पारियों की संख्या	-----		
5. नियोजित व्यक्तियों की संख्या	-----		
6. कारबार में विस्तीय हित रखने वाले भागी- दार और अन्य व्यक्तियों के नाम और पते	-----		
7. नियोजित प्रबन्धकार और लिपिक कर्म- चारीवृन्द के नाम	-----		
8. प्रति पारी परिसरों में कार्य करने वाले कर्मचारों की संख्या	-----		
9. प्रयोग की गई मशीनरी और शक्तियों के विस्तृत व्योरे, जैसे वोल्टता, परिपोधक, ट्रान्सफार्मर, कूसिबल, सामान्यतः प्रयुक्त ईंधन की प्रकृति और प्रकार	-----		
10. विनिर्माण के अन्य व्योरे	-----		
11. 31 दिसम्बर, 19----को समाप्त होने वाले बारह मास के दौरान प्राप्त हुए स्वर्ण की मात्रा, वजन और शुद्धता	-----		

(1)	(2)	(3)	(4)
12. 31 दिसम्बर, 19—को समाप्त होते वाले बारह मास के दौरान व्ययनित स्वर्ण की मात्रा, वर्णन और शुद्धता—			
13. कुल शुद्ध स्वर्ण मात्रा के समतुल्य शुद्ध स्वर्ण का भार, और निम्नलिखित को विक्रय द्वारा व्ययनित स्वर्ण का मूल्य—			
(i) विदेशी करेन्सी में संदायों के बदले भारत से बाहर के व्यक्ति और विदेशी पर्यटक—]
(ii) अन्य—			

आवेदक के हस्ताक्षर

टिप्पण : 1. सभी प्रकार का स्वर्ण, उसकी शुद्धता और रूप चाहे कोई भी हो, आवेदन में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

2. यदि आवेदन, अनुज्ञप्ति जारी करने के लिए किया गया हो तो भारत से बाहर माल के निर्यात के लिए किए गए संव्यवहारों की पूरी विशिष्टियों संलग्न की जानी चाहिए।

3. स्वर्ण की शुद्धता कैरेटों। (शतप्रतिशत शुद्धता 24 कैरेट है) या शुद्धता प्रति मिले के रूप में व्यक्त की जानी चाहिए। स्वर्ण की प्रत्येक वस्तु का वर्णन, भार और शुद्धता अलग-अलग अभिलिखित की जानी चाहिए।

4. शुद्ध स्वर्ण से 24 कैरेट शुद्धता वाले स्वर्ण अभिप्रेत है।”;

(ख) प्ररूप संख्या जी० एस० 8 के पश्चात्, निम्नलिखित प्ररूप अन्तःस्थापित किया जाएगा,, अर्थात्:—

रैंज—

संकेत—

“प्ररूप सं० जी० एस० 8—क

[नियम 6 (1) देखिए]

भारत से बाहर के व्यक्तियों को और विदेशी पर्यटकों की विक्रय के लिए।

स्वर्ण में व्यवहार करने के लिए अनुज्ञप्ति

(जो अक्षर और शब्द लागू नहीं होते उन्हें काट दीजिए)

श्री / सर्वश्री— पता —को,

जिसने/जिन्होंने स्वर्ण (नियंत्रण) अधिनियम, 1968 (1968 का 45) और उसके अधीन जारी कि०

गए नियमों, आदेशों और निदेशों में विहित शर्तों के अनुपालन करने का वचनबंध किया है और जिसने/ जिन्होंने—रूपए विहित अनुज्ञप्ति फीस संदत्त कर दी है, निम्नलिखित परिसरों में 31 दिसम्बर, 19—को समाप्त होने वाले वर्ष के दौरान स्वर्ण में व्यवहार करने के लिए, उक्त अधिनियम के उपबन्धों और उसके अधीन जारी किए गए नियमों, आदेशों और निदेशों के अधीन रहते हुए, एतद्वारा प्राधिकृत किया जाता है।

परिसरों का पता (जैसा की अनुज्ञप्ति के लिए आवेदन में वर्णित है)

.....

.....

2 इस अनुज्ञप्ति द्वारा प्रदत्त विशेषाधिकार केवल स्वर्ण में व्यवहार करने के लिए लागू होता है किन्तु जो इस शर्त के अधीन होगा कि इस अनुज्ञप्ति का/के धारक, अनुज्ञप्ति की मंजूरी के पश्चात् किसी पूरे कलेण्डर वर्ष के दौरान, ऐसी वस्तुओं, या आभूषणों, या दोनों का केवल भारत से बाहर के व्यक्तियों को विक्रय द्वारा व्ययन करेंगे।

(i) जिनका शुद्ध कुल मूल्य एक लाख रुपए से कम नहीं है और

(ii) जिनकी कुल शुद्ध स्वर्ण मात्रा एक हजार ग्राम शुद्ध स्वर्ण के समुतुल्य से कम नहीं है। तथापि जहां कोई वस्तु या आभूषण, या दोनों भारत से बाहर के व्यक्ति द्वारा विनिर्माण में त्रुटि या क्वालिटी के कारण नामंजूर कर दिए गए हों वहां उनका व्ययन स्वर्ण (नियंत्रण) अधिनियम 1968 (1968 का 45) के उपबन्धों के अनुसार किया जाएगा, और जहां ऐसे स्वर्ण का विक्रय किया जाना हो वहां वह केवल अन्य अनुज्ञप्त व्यवहारियों को बेचा जाएगा, और इस प्रकार बेची गई वस्तुओं या आभूषणों, या दोनों की कुल शुद्ध स्वर्ण मात्रा भारत से बाहर के व्यक्तियों को बेची गई वस्तुओं, या आभूषणों, या दोनों की कुल शुद्ध स्वर्ण मात्रा के दस प्रतिशत से अधिक नहीं होगी।

3. अनुज्ञप्ति में कोई भी शुद्ध तब तक विधिमान्य नहीं होगी जब तक उसके लिए अनुज्ञापन प्राधिकारी द्वारा आदेश न किया गया हो और उसके द्वारा वह सत्यापित न कर दी गई हो।

4. यह अनुज्ञप्ति स्वर्ण नियंत्रण अधिनियम, 1968 (1968 का 45) के उपबन्धों के अनुसार रद्द या निलम्बित की जा सकेगी या उसके नवीकरण के लिए इन्कार किया जा सकेगा।

5. इस अनुज्ञप्ति की मंजूरी, अनुज्ञापन कारबार या अनुज्ञापन परिसरों पर किसी अन्य व्यक्ति के ऐसे अधिकारों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना दी जायेगी जिनके लिए ऐसा व्यक्ति किसी अन्य विधि के अधीन हकदार हो।

स्थान.....

अनुज्ञापन प्राधिकारी

तारीख.....

सील.....

अनुज्ञप्ति का नवीकरण

अनुज्ञप्ति की तारीख

वह वर्ष जिसके लिए
नवीकरण किया गया

उचित अधिकारी के हस्ताक्षर

टिप्पण — अनुज्ञप्ति प्राधिकृत परिसरों के किसी मुख्य स्थान पर ऐसी रीति में संप्रदर्शित किया जाना चाहिए कि वह परिसरों का दौरा करने वाले किसी उचित अधिकारी/अन्य व्यक्ति को दिखाई दे सके।” ;

(ग) प्ररूप सं० जी० एस० 23 के पश्चात, निम्नलिखित प्ररूप अन्तःस्थापित किया जाएगा,
अर्थात् :-

“प्ररूप संख्या जी० एस० 24

आभूषणों, या वस्तुओं, या दोनों के निर्यात के लिए व्यवहारी की अनुज्ञप्ति की मंजूरी के लिए आवेदन करने वाले व्यक्ति द्वारा निष्पादित किया जाने वाला (प्रतिभूती सहित) बन्धपत्र
(नियम 15 क देखिए)

(जो शब्द और अक्षर लागू नहीं होते उन्हें काट दीजिए)

मैं/हम—

पता—

(जिसे/जिन्हें इसमें बाध्यताधारी कहा गया है) राष्ट्रपति को संदत्त की जाने वाली पांच सौ रुपए की ऐसी राशि के लिए राष्ट्रपति के प्रति आबद्ध हूँ संयुक्ततः और पृथक्तः आबद्ध हूँ जिसके संदाय के लिए मैं/हम संयुक्ततः और पृथक्तः अपने को और अपने विधिक प्रतिनिधियों को आबद्ध करता हूँ/करते हैं।

उपरोक्त बाध्यताधारी/बाध्यताधारियों को—पर स्वर्ण में व्यवहार करने के लिए अनुज्ञप्ति मंजूर की गई है और वह स्वर्ण निर्युक्षण अधिकारों के अभिलेखों में सं०—
तारीख—के रूप में रजिस्ट्रीकृत की गई है।

यतः अनुज्ञापन प्राधिकारी द्वारा यह अपेक्षा की गई है कि बाध्यताधारी इस बन्धपत्र की रकम के लिए प्रत्याभूति के रूप में, पांच सौ रुपए की नकद राशि निक्षिप्त करे/करें। पांच सौ रुपए के कुल अंकित मूल्य की इसमें इसके पश्चात यथावर्णित ऐसी प्रतिभूतियों निक्षिप्त करे/करें जो भारत के राष्ट्रपति के पक्ष में पृष्ठांकित की गई हों और सहायक केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क कलक्टर द्वारा उनकी और से स्वीकार की गई हों, अर्थात् :-

और यतः बाध्यताधारी/बाध्यताधारियों में यथापूर्वोक्त रकम। प्रतिभूतियां सहायक कलक्टर के पास निक्षिप्त करके ऐसी प्रत्याभूति दे दी है।

इस बन्धपत्र की शर्तें निम्नलिखित हैं :-

(क) बाध्यताधारी और उसके/उनके विधिक प्रतिनिधि, अनुज्ञप्ति की मंजूरी के पश्चात् किसी पूरे कलैण्डर वर्ष के दौरान ऐसी वस्तुओं, या आभूषणों, या दोनों का केवल भारत के बाहर के व्यक्तियों को विक्रय द्वारा व्ययन करे/करें।

(i) जिनका शुद्ध कुल मूल्य एक लाख रुपए से कम नहीं है, और

- (ii) जिनकी कुल शुद्ध स्वर्ण मात्रा चौबीस कैरट शुद्धता (जिसे इनमें हमके पश्चात शुद्ध स्वर्ण कहा गया है) के एक हजार ग्राम स्वर्ण के समानुप्य से कम नहीं है ;
- (ख) कोई वस्तु, या आभूषण, या दोनों विनिर्माण में क्षुटि या ब्यालिटी के कारण भारत से बाहर के व्यक्ति द्वारा नामंजूर कर दिए गए हों वहां उनका व्ययन स्वर्ण (नियंत्रण) अधिनियम, 1968 (1968 का 45) के उपबन्धों के अनुसार किया जाएगा, और जहां ऐसे स्वर्ण का विक्रय किया जाना हो वहां वह केवल अन्य अनुज्ञप्त व्यवहारियों को बेचा जाएगा और इस प्रकार बेची गई वस्तुओं, या आभूषणों, या दोनों की कुल शुद्ध स्वर्ण मात्रा भारत से बाहर के व्यक्तियों को बेची गई वस्तुओं, या आभूषणों या दोनों की कुल शुद्ध स्वर्ण मात्रा के भार के अनुसार दस प्रतिशत से अधिक नहीं होगी ।

यदि उपरोक्त शर्तों का अनुपालन किया गया हो तो यह बाध्यता शून्य हो जाएगी । अन्यथा, और इस शर्त के किसी भाग के भंग करने पर या उसके अनुपालन में असफल रहने पर वह पूर्ण वृत्त रहेगी ।

और भारत के राष्ट्रपति, अपने विकल्प पर, प्रत्याभूति निक्षेप की रकम को समपूत करने के लिए सक्षम होंगे । मैं/हम घोषणा करता हूँ/करते हैं कि यह बन्धपत्र केन्द्रीय सरकार के आदेशों के अधीन ऐसे कार्य के अनुपालन के लिए दिया गया है जिसमें जनता हितबद्ध है ।

स्थान-----

तारीख-----

बाध्याताधारी के हस्ताक्षर

साक्षी (1)-----पता (1)-----उपजीविका (1)-----

साक्षी (2)-----पता (2)-----उपजीविका (2)-----

19-----के/की-----के-----दिन मेरे द्वारा स्वीकार किया गया ।

-----केन्द्रीय उत्पाद शुल्क-----।”

[सं० एफ० 131/6/72-जी० सी० II]

एम० ए० रंगास्वामी,

स्वर्ण नियन्त्रण प्रशासक और संयुक्त सचिव ।

